|| श्री सूर्य चालीसा ||

।श्री गणेशाय नमः।
श्री स्वामी सामर्थाय नमः ।

॥दोहा॥
कनक बदन कुण्डल मकर । मुक्ता माला अङ्ग॥
पद्मासन स्थित ध्याइए । शंख चक्र के सङ्ग॥

॥चौपाई॥
जय सविता जय जयति दिवाकर । सहस्त्रांशु सप्ताश्व तिमिरहर॥
भानु पतंग मरीची भास्कर । सविता हंस सुनूर विभाकर॥ १ ॥

विवस्वान आदित्य विकर्तन । मार्तण्ड हरिरूप विरोचन॥
अम्बरमणि खग रवि कहलाते । वेद हिरण्यगर्भ कह गाते॥ २ ॥

सहस्त्रांशु , प्रद्योतन कहि कहि । मुनिगन होत प्रसन्न मोदलहि॥
अरुण सदृश सारथी मनोहर । हांकत हय साता चढ़ि रथ पर॥३ ॥

मंडल की महिमा अति न्यारी । तेज रूप केरी बलिहारी॥
उच्चैःश्रवा सदृश हय जोते! । देखि पुरन्दर लज्जित होते॥४ ॥

मित्र १. मरीचि २.भानु ३. अरुण भास्कर ४. सविता।
५. सूर्य ६. अर्क ७. खग ८. कलिकर पूषा ९. रवि।
१०. आदित्य ११. नाम लै हिरण्यगर्भाय नमः १२. कहिकै॥ ॥
द्वादस नाम प्रेम सों गावैं । मस्तक बारह बार नवावैं॥
चार पदारथ जन सो पावै । दुःख दारिद्र अघ पुञ्ज नसावै॥६ ॥

नमस्कार को चमत्कार यह । विधि हरिहर को कृपासार यह॥
सेवै भानु तुमहिं मन लाई । अष्टसिद्धि नवनिधि तेहिं पाई॥७ ॥

बारह नाम उच्चारन करते । सहस जनम के पातक टरते॥
उपाख्यान जो करते तवजन । रिपु सों जमलहते सोतेहि छन॥८ ॥

धन सुत जुत परिवार बढ़तु है । प्रबल मोह को फंद कटतु है॥
अर्क शीश को रक्षा करते । रवि ललाट पर नित्य बिहरते॥९ ॥

सूर्य नेत्र पर नित्य विराजत । कर्ण देस पर दिनकर छाजत॥
भानु नासिका वास करहु नित । भास्कर करत सदा मुखको हित॥१० ॥

ओंठ रहैं पर्जन्य हमारे । रसना बीच तीक्ष्ण बस प्यारे॥
कंठ सुवर्ण रेत की शोभा । तिग्म तेजसः कांधे लोभा॥११ ॥

पूषां बाहू मित्र पीठहिं पर । त्वष्टा वरुण रहत सुउष्णकर॥
युगल हाथ पर रक्षा कारन । भानुमान उरसर्म सुउदरचन॥१२ ॥

बसत नाभि आदित्य मनोहर । कटिमंह । रहत मन मुदभर॥
जंघा गोपति सविता बासा । गुप्त दिवाकर करत हुलासा॥१३ ॥

विवस्वान पद की रखवारी । बाहर बसते नित तम हारी॥
सहस्त्रांशु सर्वांग सम्हारै । रक्षा कवच विचित्र विचारे॥१४॥

अस जोजन अपने मन माहीं । भय जगबीच करहुं तेहि नाहीं ॥
दरिद्र कुष्ठ तेहिं कबहु न व्यापै । जोजन याको मन मंह जापै॥१५ ॥

अंधकार जग का जो हरता । नव प्रकाश से आनन्द भरता॥
ग्रह गन ग्रसि न मिटावत जाही । कोटि बार मैं प्रनवौं ताही॥

मंद सदृश सुत जग में जाके । धर्मराज सम अद्भुत बांके॥१६ ॥

धन्य-धन्य तुम दिनमनि देवा । किया करत सुरमुनि नर सेवा॥
भक्ति भावयुत पूर्ण नियम सों । दूर हटतसो भवके भ्रम सों॥१७ ॥

परम धन्य सों नर तनधारी । हैं प्रसन्न जेहि पर तम हारी॥
अरुण माघ महं सूर्य फाल्गुन । मधु वेदांग नाम रवि उदयन॥१८ ॥

भानु उदय बैसाख गिनावै । ज्येष्ठ इन्द्र आषाढ़ रवि गावै॥
यम भादों आश्विन हिमरेता । कातिक होत दिवाकर नेता॥१९ ॥

अगहन भिन्न विष्णु हैं पूसहिं । पुरुष नाम रविहैं मलमासहिं॥२० ॥

॥दोहा॥
भानु चालीसा प्रेम युत । गावहिं जे नर नित्य॥
सुख सम्पत्ति लहि बिबिध । होंहिं सदा कृतकृत्य॥
॥इति श्री सूर्य चालीसा ॥

॥ श्रीगुरुदत्तात्रेयार्पणमस्तु ॥
|| श्री स्वामी समर्थार्पण मस्तु||